ध्वनि

ध्वनि — संस्कृत काव्यशास्त्र में ध्वनि, सिद्धान्त एक महत्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में प्रतिष्ठित है। ध्वनि शब्द का निष्पत्ति — ध्वन् धातु "इ" प्रत्यय के संयोग से हुई है।

इस ध्वनि शब्द का सामान्य अर्थ — कानों को सुनाई पड़ने वाला नाद है। किन्तु पारिभाषित रूप में इस प्रकार व्यक्त कर सकते है।

"जो ध्वनि करे या कराये वह व्यंजक शब्द ध्वनि है।"

"जो ध्वनित करे या कराये वह व्यंजक अर्थ ध्वनि है।"

"जो ध्वनिति किया जाये वह ध्वनि है। इसमें रस अलंकार और - वंग्य अर्थ के ये तीनों रूप आ जाते है।"

"जिसके द्वारा ध्वनित किया जाये वह ध्वनि है। इसके शब्द अर्थ के व्यापार - व्यंजना आदि शक्तियों का बोध होता है।"

संक्षेप में ध्वनि का अर्थ है — व्यंग्य, परन्तु परिभाषिक रूप में यह व्यंग्य वाच्य - विशेष वाच्यातिशायी होना चाहिए।

ध्वनि के भेद —

(i) लक्षणामूल ध्वनि - (अविवक्षित वाच्यध्वनि)
(ii) अभिधामूला ध्वनि - (विवक्षित वाच्यध्वनि)

अमान कुमार

(i) लक्षणामूल ध्वनि — जहाँ व्यंग्यार्थ की प्राप्ति में वाच्यार्थ की विविक्षा या प्रयोजन का अभाव रहता है वहाँ पर अविवक्षित वाच्य ध्वनि होती है। ऐसे स्थलों पर व्यंग्यार्थ लक्ष्यार्थ पर आश्रित रहता है, इसलिए इसे लक्षणामूल ध्वनि कहते हैं। इसके दो भेद हैं — (i) अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ध्वनि
(ii) अत्यन्त तिरस्कृत वाच्य ध्वनि

(ii) अभिधामूला ध्वनि :— जिस ध्वनि में वाच्यार्थ की विवक्षा हो अर्थात वाच्यार्थ अभीष्ट हो, तथा वह व्यंग्यनिष्ठ हो, वहाँ अभिधामूला ध्वनि होती है। जिस ध्वनि के मूल में अभिधा होती है— वह अभिधामूला ध्वनि कहलाती है। अभिधामूला ध्वनि के दो भेद होते हैं—
〈i〉 संलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि :—
〈ii〉 असंलक्ष्यक्रमव्यंग्यध्वनि :—

कुल मिला जुला कर कहा जा सकता है कि ध्वनि वह नाद (प्रवाह, झंकार) है जिसके सहारे हम अपनी बातों को दूसरे व्यक्ति के सामने प्रकट करते हैं।

• प्रिय वियोग दुख केहि बिधि, कहाँ फूल बान से मनहित बेधत आहि

डॉ. बलराम कुमार
हिन्दी विभाग
डॉ. एल. के. वी. डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

बल(1)